नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नीट; उदाहरण पेश करने का समय

देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी 2026 का रद्द होना केवल एक परीक्षा का रद्द होना नहीं है. यह उस व्यवस्था की विफलता का प्रमाण है, जो करोड़ों युवाओं को 'मेहनत करो, सिस्टम निष्पक्ष है' का भरोसा देती रही. राजस्थान के सीकर से लेकर हरियाणा के गुरुग्राम और महाराष्ट्र के नासिक तक फैला यह पेपर लीक नेटवर्क बताता है कि अब शिक्षा माफिया केवल कोचिंग सेंटरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह डिजिटल नेटवर्क, प्रिंटिंग प्रेस, दलालों और संगठित गिरोहों के रूप में पूरे सिस्टम में घुस चुका है.

सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर 22 लाख छात्रों के भविष्य की सुरक्षा करने वाली एजेंसी एनटीए बार-बार कटघरे में क्यों खड़ी हो जाती है? 2024 में भी नीट पेपर लीक हुआ था. तब दलील दी गई कि प्रभाव 'सीमित' था, इसलिए परीक्षा रद्द नहीं होगी. लेकिन 2026 में मामला इतना व्यापक निकला कि सरकार को पूरी परीक्षा ही रद्द करनी पड़ी. इसका अर्थ साफ है कि या तो पिछली बार सच छिपाया गया था या फिर उससे कोई सबक नहीं लिया गया.

यह केवल प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि संस्थागत पतन का मामला है. जिस परीक्षा के लिए छात्र वर्षों तक दिन-रात मेहनत करते हैं, परिवार अपनी जमा पूंजी कोचिंग और हॉस्टल पर खर्च करते हैं, वही परीक्षा कुछ लाख रुपये में बाजार में बिक जाए, तो यह सीधे-सीधे ईमानदार युवाओं के साथ धोखा है. सीकर में 'गेस पेपर' के नाम पर असली प्रश्नपत्र बेचे जा रहे थे. बायोलॉजी के 90 में 90 सवाल मैच होना कोई संयोग नहीं, बल्कि सुनियोजित अपराध है. और जाहिर है यह अपराध केवल कुछ दलालों का नहीं है. सवाल उन संस्थाओं पर भी उठता है जिनके पास प्रश्नपत्र की सुरक्षा की जिम्मेदारी थी. नासिक की प्रिंटिंग प्रेस से पेपर का बाहर निकलना बताता है कि सुरक्षा व्यवस्था या तो बेहद कमजोर थी या फिर भीतर से मिलीभगत मौजूद थी. यदि देश की सबसे संवेदनशील परीक्षाओं के प्रश्नपत्र सुरक्षित नहीं हैं, तो फिर डिजिटल इंडिया और परीक्षा सुधारों के बड़े-बड़े दावे खोखले लगते हैं.

सरकार ने सीबीआई जांच सौंपकर सही कदम उठाया है, लेकिन अब केवल गिरफ्तारी से काम नहीं चलेगा. हर साल कुछ छोटे आरोपी पकड़ लिए जाते हैं, कुछ दिन टीवी डिबेट होती है और फिर सिस्टम पुराने ढर्रे पर लौट जाता है. जरूरत है कि इस बार पूरे नेटवर्क को ध्वस्त किया जाए. जिन अधिकारियों, प्रिंटिंग एजेंसियों और तकनीकी कर्मियों की भूमिका संदिग्ध है, उन पर भी वैसी ही कठोर कार्रवाई होनी चाहिए जैसी पेपर बेचने वालों पर होगी.

दुनिया के कई देशों ने परीक्षा माफिया के खिलाफ कठोर कानून बनाए हैं. चीन में इसे लगभग राष्ट्रविरोधी अपराध माना जाता है. दक्षिण कोरिया और बांग्लादेश में आजीवन ब्लैक लिस्टिंग तक का प्रावधान है. भारत में भी सार्वजनिक परीक्षा अधिनियम 2024 लागू हुआ है, लेकिन कानून तभी प्रभावी होगा जब दोषियों को त्वरित और सार्वजनिक सजा मिले.

सबसे दुखद पक्ष यह है कि इस पूरे कांड का सबसे बड़ा बोझ उन छात्रों पर पड़ेगा जिनकी कोई गलती नहीं है. दोबारा परीक्षा, मानसिक तनाव, आर्थिक बोझ और भविष्य की अनिश्चितता, यह सब उस पीढ़ी को झेलना पड़ रहा है जो डॉक्टर बनकर देश की सेवा करना चाहती है. दरअसल,अब देश को केवल 'री-एग्जाम' नहीं, बल्कि 'री-फॉर्म' चाहिए. वरना हर साल परीक्षा होगी, पेपर लीक होगा, जांच होगी और अंत में टूटेंगे केवल छात्रों के सपने.

ग्वालियर चंबल डायरी

27 के निकाय चुनाव तय करेंगे 'मिशन 2028' की दशा और दिशा

हरीश दुबे

ग्वालियर निगम परिषद के चुनाव में बमुश्किल साल भर बाकी रह गया है. अगले साल जुलाई में मौजूदा परिषद का कार्यकाल पूरा हो जाएगा. इस हिसाब से जून के आखिर या जुलाई की शुरुआत में ही चुनाव करा लिए जाने की संभावना है. दोनों मुख्य प्रतिद्वंदी दलों भाजपा और कांग्रेस ने अभी से चुनाव के लिए कमर कस ली है. यही चुनाव मिशन 28 की दशा और दिशा तय करेंगे, लिहाजा शहर की राजनीति के अलंबरदारों ने इन चुनावों पर फोकस कर दिया है. हर वार्ड के लिए तीन नाम तैयार किए जा रहे हैं, एक जनरल कैटेगिरी से, दूसरा एससी रिजर्व और तीसरा महिला कोटे से. ताकि यदि कोई वार्ड महिला या एससी होता है तो ऐन वक्त पर प्रत्याशी ढूंढने में वक्त जाया न हो. दोनों दल इस तैयारी में हैं कि चुनाव के तीन महीने पहले ही संभावित उम्मीदवारों को इशारा कर दिया जाए ताकि उन्हें अपने जनाधार की रही सही कसर पूरा करने पर्याप्त समय मिल सके.

इस बार भी पिछली बार की तरह नए चेहरे मैदान में आने की संभावना है. ऐसी सूरत में परिषद में युवा जोश तो दिखेगा लेकिन कामकाज में अनुभव की कमी नजर आएगी. पिछली मर्तबा ग्वालियर निगम के 66 वार्ड में से 55 वार्ड में जीतने वाले प्रत्याशी पहली बार पार्षद बने थे, जबकि 11 दूसरी या तीसरी बार पार्षद बनकर परिषद में पहुंचे, अर्थात मौजूदा परिषद युवा और फ्रेश थी, दोनों ही दलों की तमाम महिला नेत्रियां भी अभी से टिकट की स्पर्धा में शामिल हैं. पिछले चुनाव में 66 वार्ड में 35 महिला प्रत्याशियों ने भी जीत दर्ज कर परिषद में पचास प्रतिशत से ज्यादा का आंकड़ा छुआ था.

वैसे 2014 के चुनाव में भी 49 सीट पर नए चेहरे जीतकर आए थे. मौजूदा परिषद दो पावर सेंटरों में बटी है, महापौर कांग्रेस की हैं तो सभापति भाजपा के, नतीजन राजनीतिक रस्साकसी में जनहित के कई मसले अटके रहते हैं. इस बार दोनों दल इस कोशिश में हैं कि महापौर पद पर जीत के साथ ही परिषद में स्पष्ट बहुमत भी हासिल हो ताकि सभापति भी अपना बनवाकर पूरी परिषद पर वर्चस्व कायम किया जा सके.

निगम मंडलों पर फुलस्टॉप से इनकी आस हुई निराश

ग्वालियर की इमरती देवी और मुन्नालाल जैसे सिंधिया समर्थकों से लेकर मुरैना के गिर्राज दंडोतिया और भिंड के अरविंद, ओपीएस और रणबीर जैसे पूर्व विधायक निराश हैं. वजह यह कि पार्टी स्तर पर यह निर्णय अंतिम रूप से ले लिया है कि निगम, मंडलों और बोर्डों में अब नियुक्तियां नहीं होंगी.

हालांकि इस फैसले को प्रधानमंत्री द्वारा प्रत्येक स्तर पर बिना वजह का खर्च घटाने के आह्वान से जोड़कर देखा जा रहा है लेकिन अंदरखाने खबर यह है कि गुटों और उपगुटों में बटी भाजपा में निगम मंडलों में बिठाए जाने वाले चेहरों के नाम पर एकराय नहीं बन पा रही थी, पार्टी में और ज्यादा असमंजस या मतभेद की नौबत आए, उसके बजाए पहले इन नियुक्तियों को पेंडिंग करने और फिर इस प्रक्रिया को विराम देना पार्टी हित में ज्यादा जरूरी समझा गया. ग्वालियर जिले की बात करें तो जिले के तीन प्राधिकरणों में गुजिस्ता महीने के आखिरी हफ्ते में सात नेताओं की नियुक्तियां हुई हैं, जिनमें एक एक प्राधिकरण में सिंधिया और नरेंद्र सिंह के समर्थकों को अध्यक्षी मिली तो तीसरा प्राधिकरण संघम शरणम् हो गया.

समीक्षा को क्षमा नहीं कर पा रहे नारायण

समीक्षा गुप्ता के नाम पर मंत्री नारायण सिंह ऐसे हठ पकड़ कर बैठे कि बड़े नेताओं के दखल पर भी नहीं पसीजे. मेयर रह चुकीं समीक्षा का नाम महिला आयोग की उपाध्यक्ष पद के लिए फाइनल होने के बाद आदेश भी टाइप हो चुका था लेकिन इससे पहले कि आदेश जारी होता, नारायण सिंह की नाराजगी ने नियुक्ति रुकवा दी. इस दौरान समीक्षा दिल्ली और भोपाल में डटी रहीं, सिंधिया से लेकर कई बड़े नेताओं से उन्होंने अपना दर्द साझा किया. इन नेताओं ने नारायण सिंह से नरमाई बरतने को कहा लेकिन चौथी बार चुनाव जीतकर मंत्री बने नारायण सिंह 2018 की हार को भुलाने के लिए तैयार नहीं हुए, वे अपने राजनीतिक जीवन की इस इकलौती हार का कसूरवार समीक्षा गुप्ता की बगावत को मानते हैं. फिलहाल तो नारायण ही भारी पड़े हैं. महिला आयोग का नियुक्ति आदेश जारी हो गया है. अध्यक्ष पद पर रेखा यादव और सदस्य के रूप में साधना स्थापक के नाम तो हैं लेकिन उपाध्यक्ष का नाम गायब है.

शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण

मध्य प्रदेश की शिक्षा का स्तर कमजोर

लक्ष्मण सिंह
पूर्व सांसद

> **छात्रों का राजनीतिक दुरुपयोग-** आज हम देखते हैं कि छात्रों को राजनीति में धकेल कर उन्हें राजनीतिक दल अपने हथियार की तरह उपयोग में लेते हैं और उन्हें नौकरी रोजगार का झांसा देकर राजनीति में दुरुपयोग करते हैं .यह बच्चे या तो रेलिया में या किसी धार्मिक जुलूस में अधिकतर अपना समय बर्बाद करते हैं और स्कूल कॉलेज में कम समय बिताते हैं .पुस्तकालय में तो बहुत ही कम जाते हैं और ज्यादा समय फोन पर ही बताते हैं .आज के युग में जो शिक्षित होगा वही विश्व की प्रतिस्पर्धा में अपना स्थान बना पाएगा .

देश में मध्य प्रदेश को कई वर्षों तक पिछड़ा राज्य का दर्जा दिया जाता रहा है. बीच में तो बीमारू राज्य भी कहा जाता था.इसका मुख्य कारण यह था कि वर्तमान में छत्तीसगढ़ में मध्य प्रदेश का हिस्सा था और चुकी अधिकांश हिस्सा वन क्षेत्र में आता था इसलिए कई वर्षों तक मध्य प्रदेश में शिक्षा का स्तर अन्य राज्यों की तुलना में कमजोर रहा क्योंकि वन क्षेत्र में निर्माण की अनुमति देने की प्रक्रिया बहुत जटिल होती थी.धीरे-धीरे परिवर्तन आता गया परंतु इसके पश्चात भी अन्य राज्यों की तुलना में हम शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े रहे.छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के विभाजन से यह उम्मीद थी की शिक्षा का स्तर अब अन्य राज्यों जैसा विकसित यहां भी हो जाएगा परंतु दुर्भाग्य वर्ष ऐसा नहीं हुआ.और आज भी मध्य प्रदेश की शिक्षा का स्तर अन्य राज्यों की तुलना में काफी कमजोर है, और इसके कई कारण भी है.मेरे 40 वर्ष के राजनीतिक जीवन के कुछ अनुभव और सुझाव हैं.

(1) बिल्डिंग और शिक्षकों का अभाव-कई वर्षों तक एक अजीब कानून बना रहा की स्कूल का भवन निर्माण या स्कूल की स्थापना जनसंख्या के आधार पर होगी इसका परिणाम यह रहा कि जहां स्कूल खुलवाना था वहां लोगों ने जनसंख्या बढ़ाना शुरू कर दिया स्कूल खुलवाने के लिए जिसके कारण आबादी में अप्रत्याशित वृद्धि होती रही.किसी भी प्रदेश में या कानून नहीं था और जहां कम्म बच्चे थे वहां कई राज्यों में प्राथमिकता पर स्कूल खोले गए जिससे उन्हें शिक्षा ग्रहण करने दूर नहीं जाना पड़े पर दुर्भाग्य वर्ष मध्य प्रदेश में ऐसा नहीं था और इस दोषपूर्ण नीति की जवाबदारी पूरी तरह से अफसर शाही और नेताओं को जाती है क्योंकि उन्होंने इसमें कोई बदलाव नहीं किया.शिक्षकों की भर्ती भी की गई तो सिफारिश और रिश्वत के आधार पर अधिक हुई और शिक्षकों की गुणवत्ता पर भी इसका प्रभाव पड़ा मैं सभी गुरुजनों का सम्मान करता हूं पर उन्हें भी शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रमाण देने की आवश्यकता है क्योंकि मध्य प्रदेश के छात्र प्रतिस्पर्धा में अक्सर पीछे रह जाते हैं.हालांकि कुछ वर्षों वर्षों से मध्य प्रदेश के छात्रों में भी शिक्षा जगत में अपना परचम फहराया परंतु अभी भी बहुत सुधार करने की आवश्यकता है.

(2) निजी स्कूलों को बढ़ावा- कुछ वर्षों से शिक्षा का व्यवसायी करण काफी तेजी से हुआ है और गरीब बच्चे जो उनकी महंगी फीस नहीं दे पाए वह अशिक्षित रह जाते हैं क्योंकि शासकीय स्कूलों में हम सब देखते हैं की गुणवत्ता की शिक्षा नहीं दी जाती है.कई स्कूलों में शिक्षकों का भाव रहता है तो कई स्कूलों में फर्नीचर नहीं होता है.ग्रामीण क्षेत्रों में अभी तक कई जगह कंप्यूटर शिक्षा को अच्छा नहीं माना जाता है और कंप्यूटर जो जनप्रतिनिधियों या शासन ने दिए थे वह अधिकतर नेताओं के घरों में पहुंचा दिए गए जिससे उन्हें के बच्चे सीखें और गरीब बच्चे नहीं सीखें क्योंकि समाज में आज भी आजादी के इतने वर्षों बाद असमानता है और जाति की राजनीति ने इसे और बढ़ावा दिया.

मैं विधायक था, तो मेरी अधिकांश राशि शिक्षा क्षेत्र में ही दी जाती थी कई जगह उसका सदुपयोग भी हुआ और बच्चों ने गुणवत्ता की शिक्षा भी ग्रहण की परंतु कई स्थानों पर कंप्यूटर चोरी भी हो गए और प्रशासन ने उन्हें ढूंढने का प्रयास भी नहीं किया शासकीय विद्यालय को गुणवत्ता देने हेतु संदीप ने विद्यालय योजना सीएम राइज स्कूल जैसी योजना लागू की गई है परंतु इसका ऑडिट होगा तब पता लगेगा कि यह योजना कितनी सफल हुई अभी तो प्रचार प्रसार और नेताओं के भाषणों से ही श्रय लेने तक ही सीमित है।

(3) गुरु शिष्य परंपरा- यह परंपरा हमारे देश में हजारों वर्षों से प्रचलित है जो अब धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है.इसके कई उदाहरण हम देखते हैं अगस्त 2025 में नरसिंहपुर मध्य प्रदेश जहां स्वामी स्वरूपानंद जी का आश्रम भी है और यह भी माना जाता है कि यहां हर घर में संस्कार सिखाए जाते हैं, वहां का कक्षा 12वीं का एक छात्र उसने अपनी महिला शिक्षिका के ऊपर पेट्रोल डालकर उन्हें जलाने का प्रयास किया बड़ी आश्चर्यजनक घटना है.और इसके लिए स्कूल अकेला नहीं बच्चों के परिवार वालों की भी जवाबदारी होती है प्राचीन युग की गुरु शिष्य परंपरा पुनः प्रचलित करना अति आवश्यक है शिक्षकों का प्रशिक्षण उच्च कोटि का होना चाहिए.

यह भी देखा गया है.कि अगर शिक्षक किसी गरीब परिवार का है.उसे जितना सम्मान मिलना चाहिए नहीं मिल पाता इसका सारा दोष जातिगत राजनीति का है और हम सब एक हैं, भारतवासी हैं, इस भावना से हमें काम करना चाहिए.

अब होगी विजय की असली परीक्षा

विजय के इरादों पर संदेह नहीं है. उन्होंने खुद ही कहा कि भूख और गरीबी क्या होती है, इसे वह भलीभांति जानते हैं. महिलाओं की सुरक्षा के लिए 'सिंगामेन' नामक विशेष एक्शन फोर्स तथा नशीले पदार्थों के खिलाफ पथक बनाने की उन्होंने घोषणा की.

स्वयं को एकमात्र सत्ता केंद्र बताने वाले तमिलनाडु के नए मुख्यमंत्री जोसेफ विजय को समझना होगा कि स्टार के रूप में उनकी चमक-दमक ने उन्हें इस पद पर तो पहुंचा दिया, लेकिन अब उनकी असली परीक्षा होगी. राज्य पर पहले ही 10 लाख करोड़ रुपए कर्ज का भारी बोझ है यह बात उन्होंने आर्थिक स्थिति पर श्वेतपत्र जारी करते हुए स्वीकार की है. ऐसी हालत में महिलाओं को हर माह 2,500 रुपए, मुफ्त 6 गैस सिलेंडर, लड़कियों की शादी में 800 ग्राम सोना देने, किसानों को कर्जमाफी, 25 लाख रुपए का स्वास्थ्य बीमा, युवाओं को बेरोजगारी भत्ता तथा एजुकेशन लोन देने जैसे चुनावी वादे कहां से और किस प्रकार पूरे हो पाएंगे? विजय के इरादों पर संदेह नहीं है. उन्होंने खुद ही कहा कि भूख और गरीबी क्या होती है, इसे वह भलीभांति जानते हैं. महिलाओं की सुरक्षा के लिए 'सिंगामेन' नामक विशेष एक्शन फोर्स तथा नशीले पदार्थों के खिलाफ पथक बनाने की उन्होंने घोषणा की. भ्रष्टाचार का तीव्र विरोध करते हुए विजय ने कहा कि वह जनता के एक भी पैसे को हाथ नहीं लगाएंगे और किसी को भी ऐसा करने नहीं देंगे. शिक्षा, राशन, स्वास्थ्य सेवा, जलापूर्ति, सड़क निर्माण तथा बस सुविधा जैसी बुनियादी जरूरतों को प्राथमिकता देने का भी उनका वादा है. उन्हें इसके लिए केंद्र सरकार से मदद की जरूरत पड़ेगी. देखना होगा कि मोदी सरकार का इस बारे में क्या रुख रहता है. खुद की पार्टी की पूरी मेजॉरिटी नहीं होने से उनकी सरकार कांग्रेस, वीसीके, आईयूएमएल तथा माकपा, भाकपा के सहयोग पर निर्भर है. उनका भी ध्यान रखना होगा. आखिर वह जन आकांक्षाओं को कितना पूरा कर पाएंगे? वैसे तमिलनाडु देश की मजबूत अर्थव्यवस्था वाले राज्यों में से एक है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

प्रधानमंत्री मोदी ने दिखाई राह स्वर्ण खरीदी का छोड़ो मोह

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, देशवासी मोहग्रस्त हैं तभी तो कितने ही लोग एकसाथ 4-4 अंगुलियों में सोने की अंगूठियां पहनते हैं. कुछ मर्द गले में सोने की मोटी चेन भी पहनते हैं और कलाई में गोल्डन कड़ा या ब्रेसलेट!'

हमने कहा, 'अपना-अपना शौक है. इससे व्यक्ति की संपन्नता झलकती है. सौभाग्यवती महिलाएं वट सावित्री जैसे पर्व पर नाक में सोने की नथ, कानों में झुमके या बाली, गले में सोने का मंगलसूत्र और बढ़िया सा नेकलेस, कलाइयों में कंगन पहनती हैं. कुछ के पास सोने के बाजूबंद भी होते हैं. महिलाओं को आभूषण पहनने और नए-नए गहने खरीदने की स्वाभाविक अभिलाषा होती है. धर्मस्थलों में भी भरपूर सोना है. अमृतसर का स्वर्ण मंदिर प्रसिद्ध है. काशी विश्वनाथ मंदिर को महाराजा रणजीत सिंह ने सोने से मढ़वाया था. पदमनाभ मंदिर के भंडार में सोना ही सोना है. लोग सिर्फ सोना पहनते ही नहीं, तिरुपति बालाजी मंदिर और शिरडी साईं मंदिर में श्रद्धापूर्वक अर्पित भी करते हैं. धर्म-कर्म सभी में सोना है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जिसके घर में जितना सोना है, उतना रखो लेकिन पीएम मोदी का कहना है कि अब आगे से सोना खरीदना बंद करो क्योंकि विदेश से सोना मंगाने पर फॉरेन एक्सचेंज खर्च होता है. घर में ज्यादा सोना है तो सउसे देकर गोल्ड बॉन्ड खरीदो.' हमने कहा, 'गोल्ड बॉन्ड शब्द से याद आया कि जेम्स बॉन्ड की एक फिल्म का नाम 'मैन विद दि गोल्डन गन' था. ग्रेगरी पेक व ओमर शरीफ की फिल्म का नाम था-मैकेनाज गोल्ड! पंचवटी में सीता के कहने पर राम स्वर्ण मृग के पीछे भागे थे. इस दौरान सीता हरण हो गया था. रामायण में सोने की लंका का उल्लेख है. भगवान राम ने निशानी के तौर पर अपनी स्वर्ण मुद्रिका देकर हनुमान को लंका भेजा था. सीताजी ने भी अपनी चूड़ामणि उतारकर हनुमान के हाथों प्रभु राम के पास भेजी थी. पुराने राजा-महाराजा सोने का मुकुट पहनकर स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान होते थे. इतिहास में गुप्त काल स्वर्णकाल कहलाता है जब स्वर्णमुद्राएं चला करती थीं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह मत भूलिए कि मोरारजी देसाई ने गोल्ड कंट्रोल ऑर्डर लागू कर बड़ी निर्ममता से देश के लाखों स्वर्णकारों और सराफा व्यापारियों का रोजगार छीन लिया था. मोरारजी और मोदी दोनों के नाम में 'म' है. वक्त का पहिया फिर उसी दिशा में घूम रहा है. पीएम नहीं चाहते कि कोई ज्वेलर के शोरूम के सामने से जाए. उसका मन ललचाए, रहा न जाए ! वहां वैधानिक चेतावनी लगनी चाहिए- स्वर्णाभूषण खरीदी देश की सेहत के लिए हानिकारक है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12257
- डॉ. सागर खादीवाला

1			■	■	2		3
	■	■	4	5		■	
6					■	7	
	■	■	8			■	
■	9	10			■	■	
11				■	12	13	■
14		■	■	15			17
	■	18				■	

बाएं से दाएं
1. तैनाती, मुकर्ररी, नियुक्त होने या करने की क्रिया 2. बिना टिकट लगी चिट्ठी 4. प्रारंभ से, पूर्ण रूप से, जड़ तक 6. जिसका सत्कार किया जा रहा हो 7. स्वप्न 8. 'ल' वर्ण 9. सूखे हुए कच्चे आम का पिसा हुआ चूर्ण 11. कीचड़ से भरपूर स्थान 12. निकट, करीब 14. स्वर ताल और लय युक्त संगीत 15. राह चलने वाला 18. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट इत्यादि बनाए जाते हैं, जूट

ऊपर से नीचे
1. बाहर करना, हटाना, निकालना, देश निकाला 2. वृषभ 3. गले में बाहें डालना 4. एड़ी से चोटी तक 5. मूर्ति या बूत बनाने वाला 9. पृथक, जुदा 10. नशा, आनंद 11. मेज में लगा हुआ खाना, दीर्घ (उर्दू) 12. पत्थर, प्रस्तर 13. सहोदर, एक ही कुल की 15. लगाम, बागडोर 17. डोरी, रज्जु

Solution 12256

रा	ज	र्षि	■	स	■	मौ	न
मे	ल	■	क	हा	व	त	■
श्व	■	ह	म	रा	ज	■	मू
र	ख	वा	ला	■	न	म	क
■	पा	ला	■	क्यों	■	ह	■
स	ना	त	न	■	अ	त्ता	र
मू	■	■	सी	व	न	■	प्ता
ल	बा	ल	ब	■	ल	की	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष क प्रारंभ में नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी, अधिनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में संलग्नता रहेगी, व्यवसाय में वृद्धि होगी, आर्थिक लाभ होगा, उतावलेपन में लिये गये निर्णय हानिकारक रहेंगे, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें, मित्र के सहयोग से उदासीनता दूर होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ का योग है, व्यवसाय में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों की सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को उतावलेपन पर लिया गया निर्णय हानिकारक रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये व्यक्तित्व में विकास होगा, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक संकोची, परिश्रमी, ईमानदार, व्यवहारकुशल होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, परोपकारी एवं ईश्वर भक्त होगा, लेखन कार्यो में रूचि रहेगी, स्वतंत्र व्यवसाय में रूचि रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

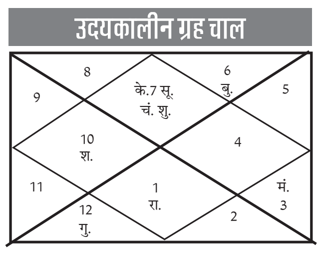

पंचांग

रा.मि. 24 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी गुरूवासरे दिन 7/34, रेवती नक्षत्रे रात 7/27, प्रीति योगे दिन 3/20, तैतिल करणे सू.उ. 5/24, सू.अ. 6/36, चन्द्रचार मीन रात 7/27 से मेष, पर्व-प्रदोष वट सावित्री व्रतारम्भ, व्रत, शु.रा. 12, 2, 3, 6, 7, 10 अ.रा. 1, 4, 5, 8, 9, 11 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से काले उड़द, तिल, तेल, सरसों, सींगदाना, लोहा, शेयर, के भाव में तेजी, होगी. लाल रंग की वस्तुओं में तेजी का रूख रहेगा. भाग्यांक 2189 है.

मेष- भाग्योदयकारी अवसर हाथ में आयेंगे, कामकाज को लेकर यात्रा होगी, कार्य की अधिकता रहेगी, परिश्रमी कार्यों में थकान होगी.

वृषभ- अनुभवी लोगों का साथ लाभकारी रहेगा, राजकीय मामले सुलझेंगे, मनोंवाछित सफ्लता प्राप्ति के योग हैं, खानपान की अनियमितता बनी रहेगी.

मिथुन- कार्यक्षेत्र में उलझनें बढ़ सकती हैं, अज्ञात भय तथा चिन्ता रहेगी, दैनिक कार्यो में अवरोध होगा, लाभ होगा. प्रवास में सावधानी रखें.

कर्क- बदले माहौल में खुद को ढालना होगा, लाभ में कमी रहेगी, लेखन रचनात्मक कार्यों में सफ्लता मिलेगी, वाहन आदि की समस्याओं का समाधान होगा.

सिंह- पूरे मनोयोग से कार्य करने पर अच्छी सफ्लता मिलेगी, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, मातृपक्ष की चिन्ता दूर होगी, नौकरी में अनुकूलता रहेगी.

कन्या- जोखिम के कार्यो में रूचि बढ़ेगी, व्यापारिक मामले सुलझेंगे, साहसिक प्रयत्न करने से अभीष्ट की प्राप्ति होगी, महत्वपूर्ण संदेश प्राप्त होगा.

तुला- निजी कार्यो को पूरा करने में परेशानी आयेगी, परिवार का सहयोग मिलेगा, नवीन वस्त्राभूषण उपहार आदि की प्राप्ति होगी, सम्मान मिलेगी.

वृश्चिक- जल्दबाजी में गलती करके पछताना होगा, दौड़धूप के अच्छे परिणाम मिलेंगे, स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, इच्छानुसार कार्य पूर्ण होंगे.

धनु- मनचाही सफ्लता के आसार बनेंगे, भौतिक सुख सुविधा पर खर्च संभव है, अनावश्यक कार्यो में समय खर्च होगा, कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा.

मकर- प्रापर्टी संबंधी मामले सुलझेंगे, वैभव के सामान पर खर्च की संभावना है, नये मैत्री संबंध लाभदायक सिद्ध होंगे, आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी.

कुम्भ- व्यापारिक कार्यो में सम्हलकर फैसला लें, राजकीय प्रयासों में सफ्लता मिलेगी, नौकरी के संबंध में चिन्ता रहेगी, सुख साधनों में वृद्धि होगी.

मीन- कानूनी मामलों में पक्ष मजबूत होगा, धार्मिक कार्यो की पूर्ति होगी, संतान की चिन्ता रहेगी, यश मिलेगा. सुख साधन में व्यय होगा.

SUDOKU 7389

		9		5		2		4
4	5				9	7	1	8
				7			5	3
	8	2	7		5			6
1	3			4			7	2
5			1		2	8	3	
8	4			9				
3	6	1	2				9	5
2		5		1		6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7388

7	8	6	4	1	3	5	9	2
5	9	4	7	8	2	1	6	3
1	2	3	6	9	5	7	4	8
9	3	8	2	6	1	4	7	5
2	7	5	8	4	9	6	3	1
6	4	1	5	3	7	2	8	9
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	1	7	9	2	6	3	5	4
4	6	2	3	5	8	9	1	7